साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2552, चैत्र पूर्णिमा, ९ अप्रेल, 2009 वर्ष 38 अंक 10

For Patrika in various languages, visit: http://www.vri.dhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

सुखो बुद्धानमुप्पादो, सुखा सद्धम्मदेसना।
सुखा सङ्घस्स सामग्गी, समग्गानं तपो सुखो॥
– धम्मपद १९४, बुद्धवग्गो

सुखदायी है बुद्धों का उत्पन्न होना, सुखदायी है सद्धर्म का उपदेश। सुखदायी है संघ की एकता, सुखदायी है एक साथ तपना।

[बुद्धजीवन-चित्रावली]

[बुद्धजीवन-चित्रावली के सभी चित्र बन कर तैयार हो गये हैं। फ्रेमिंग के बाद इन्हें आर्टगैलरी में यथास्थान सजाया जायगा। (बुद्धकालीन ऐतिहासिक घटनाओं की ये चित्रकथाएं इस बात को सिद्ध करेंगी कि उन्होंने लोगों को सही माने में प्रज्ञा में स्थित होना सिखाया। स्थितप्रज्ञ होने की ही शिक्षा दी। उन्होंने शील, समाधि और प्रज्ञा द्वारा विपश्यना का अभ्यास करना सिखाया। वे स्वयं प्रज्ञा में स्थित हुए और उनके बताये मार्ग पर चलने वाले लोग किस प्रकार प्रज्ञा में स्थित हुए – ये बातें इन चित्रकथाओं में स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी हैं।)

संक्षिप्त व्याख्या सहित इन चित्रों की **सजिल्द** *पुस्तक सभी चित्रों के साथ छप गयी है जो कि पूर्व में छपी धम्मगिरि की चित्रावली से अधिक आकर्षक, टिकाऊ और सुंदर है। धम्मगिरि-चित्रावली के शेष आलेख इस पत्रिका में प्रकाशित कर रहे हैं। वृहत् बुद्धजीवन-चित्रावली के आलेख बाद में प्रकाशित होंगे। सं.]*

उत्तम ब्राह्मण सुनीत

रात्रि के निबिड़ अंधकार को दूर करते हुए भुवन-भास्कर प्राची में उदय हो रहे थे। सर्वत्र नवजीवन प्रस्फुटित हो रहा था।

ऐसे समय भगवान तथागत भिक्षु-संघ के साथ मगध की राजधानी राजगीर की ओर प्रयाण कर रहे थे। भगवान और उनका भिक्षु-संघ नजर नीची किये हुए धीमे कदमों से नगर की ओर चला आ रहा था।

सामने राजमार्ग पर नगर का भंगी सुनीत कमर झुकाए, हाथ में झाड़ू लिये सड़क बुहार रहा था। मंद-मंद पदचाप कान पर पड़ी तो सुनीत रुका और सामने भगवान और भिक्षु-संघ को देख कर ठिठका रह गया। भगवान के दर्शन होते ही शरीर पुलक-रोमांच से भर उठा। हृदय गद्गद हो गया। आंखों से अविरल अश्रुधार बह निकली। श्रद्धा-विभोर दोनों हाथ उठे तो उठे ही रह गये, जुड़े तो जुड़े ही रह गये। भगवान के मुखमंडल को देखा तो देखता ही रह गया। विह्वल-कंठ से केवल दो शब्द ही निकल पाये, "भंते! भगवान!" भगवान ने करुण नेत्रों से उसे निहारा। भाग्यवान सुनीत भीग-भीग उठा उस पतित-पावनी धर्मगंगा में स्नान करके।

पर मन में एक हीन-भाव की ग्रंथि बांधे वहीं खड़ा रहा। मैं अस्पृश्य, अंत्यज, अत्यंत हीन-कुल में उत्पन्न और भगवान सूर्यवंशी शाक्यकुलीन क्षत्रिय। इन पर तो मेरी दूषित छाया भी नहीं पड़नी चाहिए। इसी सकुचाहट में एक ओर हाथ बांधे खड़ा रहा। भगवान ने उसके मन के भाव पहचाने। निर्दयी समाज का संत्रस्त शोषित दीन-दुखियारा। निर्मम समाज की दूषित व्यवस्था का असहाय शिकार। संतापहारिणी अमृतवाणी से भगवान ने कहा, "आओ!"

सुन कर सुनीत के शरीर का रेशा-रेशा, तार-तार झनझना उठा। साहस बटोर कर भगवान के समीप गया और भावविभोर उनके चरणों में अपना सिर टेक दिया।

कितनी शांति है, कितना सुख है, महाकारुणिक के मंगल चरणों में। कुछ समय बाद साहस बटोर कर बोला, "भंते भगवान! मुझे भी इन चरणों में स्थान दीजिए। मुझे भी भिक्षु बनाइये। मैं भी अपना जीवन सफल कर सकूं।" भगवान ने करुणा-विगलित वाणी में कहा, "आओ, भिक्षु!" सुनीत का भाग्य जागा। इन्हीं शब्दों में उसे भगवान से भिक्षु होने की उपसंपदा मिली। सुनीत को यूं लगा जैसे करुणा-सागर ने उसे गले से लगा लिया है और उसका सिर सहला रहे हैं; जैसे उसे छाती से लगा लिया है और उसकी पीठ थपथपा रहे हैं। वह निहाल हो गया।

भगवान उसे भिक्षु-संघ के साथ राजगीर के वेणुवन में ले गये। ध्यान की विधि सिखायी। विपश्यना साधना का कर्मस्थान दिया। सुनीत इस साधना-विधि को भलीभांति समझ कर समीप के अरण्य में जा कर तपने लगा। यों अनित्य, दुःख और अनात्म की सच्चाइयों का अनुभव करता हुआ शनैः शनैः राग, द्वेष और मोह के बंधनों से छुटकारा पाने लगा। पूर्वसंचित कर्म-संस्कारों की उदीर्णा होने लगी, निर्जरा होने लगी। उनका क्षय होने लगा। तब स्रोतापत्ति फल चख कर अनार्य से आर्य अवस्था को प्राप्त हुआ। तदनंतर सकदागामी, अनागामी और अरहंत फललाभी हुआ।

विमुक्ति के वैभव से विभूषित इस परम संत के दर्शन करने और इसका अभिवादन करने देव-मंडली सहित देवेंद्र आये, ब्रह्मा आये। भगवान इस दृश्य को देख कर मुस्कुराये। उनके मुँह से उदान के ये बोल निकल पड़े –

तपेन ब्रह्मचरियेन, संयमेन दमेन च।
एतेन ब्राह्मणो होति, एतं ब्राह्मणमुत्तमं॥
– (थेरगा० ६३१, सुनीतत्थेरगाथा)

– तप से, ब्रह्मचर्य से, संयम से और दम से ही कोई ब्राह्मण बनता है। ऐसा ब्राह्मण ही उत्तम ब्राह्मण है।

आओ, भंगी से ब्राह्मण हुए उस परम संत सुनीत की पावन स्मृति में हम भी शत-शत बार नतमस्तक हो, उनका अभिनंदन करें!

बोधि राजकुमार

कौशांबी का बोधि राजकुमार भगवान के प्रति अत्यंत श्रद्धालु था। उसने एक नया महल बनवाया, जिसके गृह-प्रवेश के अवसर पर उसने संघ-सहित भगवान को भोजन के लिए आमंत्रित किया। भगवान समय पर पहुँच गये। बोधि राजकुमार महल के नीचे उनकी अगवानी के लिए खड़ा था। भगवान के आते ही उसने उन्हें महल की सीढ़ियों पर चढ़ने का निवेदन किया। उसने भगवान के सम्मान में महल की सीढ़ियों पर सफेद धुस्से (ऊन के पांवड़े) बिछा रखे थे। भगवान ने उन पर पांव नहीं रखा। आनंद ने बोधि राजकुमार से कहा –

संहरतु, राजकुमार, दुस्सानि – राजकुमार, धुस्सों को समेट लो,

न भगवा चेलपटिकं अक्कमिस्सति – भगवान चेल-पंक्ति पर, अर्थात कपड़े के पांवड़ों पर, पैर नहीं रखेंगे।

पच्छिमं जनतं तथागतो अनुकम्पति – भावी जनता पर भगवान अनुकंपा कर रहे हैं।

भगवान ऐसी कोई गलत परंपरा स्थापित नहीं करना चाहते थे जिससे कि भावी पीढ़ी के आचार्यो के लिए पांवड़ों पर चलने की परिपाटी बने और भक्तों को यह अशोभनीय बोझ उठाना पड़े।

भोजनोपरांत भगवान ने धर्म-देशना दी। उन्होंने बोधि राजकुमार के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि यदि योग्य पात्र हो, तो प्रातः प्रशिक्षित किया हुआ व्यक्ति भगवान के बताये हुए मार्ग पर चल कर शाम तक और शाम को प्रशिक्षित किया हुआ व्यक्ति सुबह तक मुक्त-अवस्था को प्राप्त कर सकता है। यह सुन कर प्रसन्न-चित्त हो, बोधि राजकुमार ने हर्ष के वचन कहे –

अहो बुद्धो, अहो धम्मो, अहो धम्मस्स स्वाक्खातता!

– (म० नि० २.३२६, ३४५, बोधिराजकुमारसुत्त)

– अहो बुद्ध, अहो धर्म, अहो धर्म की सुआख्यातता, अर्थात धर्म का सु-आख्यान!

तदुपरांत बोधि राजकुमार ने बताया कि जब वह गर्भ में था, तब उसकी मां भगवान को नमस्कार करने आयी और कहा कि भंते, मेरी कोख में जो भी कुमारी या कुमार है, वह भगवान की, धर्म की और संघ की शरण जाता है। इसे भी अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें। फिर जन्म के पश्चात एक बार उसकी धाय उसे गोद में उठाये भगवान के पास आयी और भगवान को नमस्कार कर कहा – भंते, यह बोधि राजकुमार भगवान की, धर्म की, और संघ की शरण ग्रहण करता है। इसे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें। और अब यह तीसरी बार मैं स्वयं प्रत्यक्ष भगवान की, धर्म की, और संघ की शरण आया हूं। आज से भगवान मुझे जीवन-पर्यंत शरणागत उपासक स्वीकार करें।

– (म०नि० २.३४६, बोधिराजकुमारसुत्त)

भगवान के इस एक महत्त्वपूर्ण संकेत से भावी पीढ़ियों के सभी धर्माचार्यों को यह सबक ग्रहण करना चाहिए कि लाभ-सत्कार प्राप्त करने के लिए सद्धर्म का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। जब कोई शिक्षक मान-सम्मान प्राप्त करने के लिए धर्म सिखाता है तब अपनी हानि कर लेता है, श्रद्धालुओं की हानि कर लेता है, सद्धर्म की हानि कर लेता है। नासमझ उपासक सिखाये हुए धर्म का तो पालन नहीं करता; परंतु आचार्य का अभिनंदन करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ बैठता है।

सोण और उत्तर

सम्राट अशोक के संरक्षण में तृतीय धर्मसंगीति पूर्ण करके महास्थविर मोग्गलिपुत्त तिस्स ने जब भगवान बुद्ध की कल्याणी विद्या भिन्न-भिन्न देश-प्रदेशों में भेजी, तब अरहंत सोण और उत्तर उसे सुवण्णभूमि (स्वर्णभूमि, म्यंमा) ले गये। इन धर्मदूतों ने वहां सर्वप्रथम ब्रह्मजालसुत्त का उपदेश दिया जिससे प्रभावित होकर अनेक लोग सद्धर्म में प्रतिष्ठित हुए और बहुतों ने प्रव्रज्या भी ग्रहण की।

सुवण्णभूमि में सर्वप्रथम इसी सूत्र के उपदेश से यह अनुमान किया जा सकता है कि बुद्धपूर्व काल के जो भारतीय सुवण्णभूमि गये थे, वे भिन्न-भिन्न दार्शनिक मान्यताओं से बँधे हुए थे और स्थानीय लोगों पर भी इन मान्यताओं का गहरा प्रभाव था। सोण और उत्तर ने इसे दूर करना आरंभ किया। इसके बाद ही सुवण्णभूमि में बुद्धशासन अपने शुद्ध रूप में स्थापित होने लगा।

ब्रह्मजालसुत्त तत्कालीन भारत की ६२ (बासठ) प्रकार की शाश्वतवादी अथवा उच्छेदवादी दार्शनिक मान्यताओं की गणना या उनका खंडनमात्र ही नहीं है, प्रत्युत यह विपश्यना साधना का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है। दूषित और अधूरी साधनाओं की कमियों को इसमें दर्शाया गया है और इसके साथ-साथ शुद्ध विपश्यना द्वारा नितांत भवविमुक्ति की शिक्षा भी इसमें निहित है। अरहंत सोण और उत्तर ने विपश्यना द्वारा भवमुक्त अरहंत अवस्था उपलब्ध कर सकने का मार्ग प्रशस्त किया और यह विधि अपने शुद्ध रूप में दक्षिण बर्मा के मोन प्रदेश में सदियों तक जीवित रही। इस शुद्ध प्रतिपत्ति के साथ-साथ तिपिटक की परियत्ति भी यहां शुद्ध रूप में जीवित रखी गयी।

सारे ब्रह्मदेश में बुद्धशासन के सर्वथा लुप्त हो जाने की नौबत कभी नहीं आयी। यदाकदा जब कहीं जरा दुर्बलता आयी तब उसे श्रीलंका से बल प्राप्त होता रहा। इससे बुद्धशासन की नींव यहां सदा सुदृढ़ बनी रही। तभी यहां पांचवां और छठा संगायन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

विपश्यना के ही कारण यहां पीढ़ी-दर-पीढ़ी शैक्ष्य और अशैक्ष्य, सम्मुति और परमत्थ संघ विद्यमान रहा। सम्मुति-संघ माने वे सामान्य भिक्षु जो आर्य अवस्था तक अभी नहीं पहुँच पाये, परंतु परमत्थ यानी उच्चतम आदर्श के लिए प्रयत्नशील हैं। शैक्ष्य भिक्षु वे जो आर्य अवस्था (स्रोतापत्ति अथवा सकृदागामी अथवा अनागामी) तक पहुँच गये, परंतु अभी अरहंत नहीं बन पाये। अशैक्ष्य भिक्षु वे जो अरहंत अवस्था तक पहुँच गये। ये सारी अवस्थाएं विपश्यना द्वारा ही प्राप्य हैं। अतः स्पष्ट है कि दक्षिण म्यंमा में विपश्यना विद्या अनेक सदियों तक शुद्ध रूप में जीवित रखी गयी और इसी प्रकार संपूर्ण कल्याणी बुद्धवाणी भी शुद्धतः कायम रखी गयी।

मध्य म्यंमा का सगायीं पर्वत विपश्यना विद्या का कल्याणकारी केंद्र बना रहा। पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा वहां विपश्यना

विद्या का प्रशिक्षण अबाध रूप से चलता रहा। यह सच है कि अधिकांश भिक्षु परियत्ति, यानी तिपिटक, के अध्ययन-अध्यापन में रुचि रखते रहे। अतः हर पीढ़ी में पटिपत्ति, यानी विपश्यना, में रुचि रखने वाले भिक्षु इने-गिने ही होते थे, पर फिर भी इन थोड़े से विपश्यी भिक्षुओं ने गुरु-शिष्य की अक्षुण्ण परंपरा द्वारा इस विद्या को जीवित रखा। इतिहास को न इन सभी गुरुओं के नाम याद हैं और न इनके शिष्यों के। परंतु यह भगवती विद्या अपने शुद्ध रूप में कायम रही, तभी द्वितीय बुद्धशासन के आरंभ होने पर यह भारत लौटी और विश्व में फैली। धन्य हैं अरहंत सोण और उत्तर! असीम उपकार है उनका।

घर-घर में पालि

पालि प्रशिक्षण के लिए धम्मगिरि पर योग्य व्यक्तियों के लिए विधिवत कक्षाएं चलती हैं। अतः पालि के सामान्य ज्ञान के लिए **"घर-घर में पालि"** अभियान चलाते हुए, पालि प्रशिक्षकों के माध्यम से स्थान-स्थान पर **७-दिवसीय पालि प्रशिक्षण कार्यशालाओं** का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक साधक-साधिकाएं निम्न स्थानों पर आयोजित कार्यशालाओं का लाभ ले सकते हैं। **पालि प्रशिक्षण कार्यशालाएं :–**

(१) २३-५ से ३१-५-२००९. (हिंदी भाषा में भारतीय तथा नेपालिओं के लिए)

स्थानः कोठारी फार्म हाऊस, जयपुर-अजमेर राजमार्ग से २ कि.मी. अंदर, भानक्रोटा-जयसिंहपुरा रोड, भानक्रोटा, जयपुर. **संपर्कः** कु. मेघना, मो. ०९६०२८ ४८८९६, ईमल– paliworkshop@yahoo.co.in

(२) दि. १५ से २३ अगस्त, २००९. स्थान – पुखराज पैलेस, फूटी कोठी, इंदौर.

संपर्क – श्रीमती संगीता चौधरी, ८१, बैराठी कॉलोनी, सिंधी कॉलोनी के सामने, इंदौर- ४५२०१४. (म.प्र.) फोन- ९८९३०- २९१६७.
ईमेल – dhammmalwa@yahoo.co.in

विश्व विपश्यना पगोडा की यात्रा

विगत ८ फरवरी, २००९ को विश्व विपश्यना पगोडा का उद्घाटन विधिवत संपन्न हुआ। अब यह प्रातः ९ बजे से सायं ६ बजे तक सामान्य जन के लिए खोल दिया गया है।

जो अतिथि गाड़ी से आयेंगे उन्हें पगोडा जाने के पहले पार्किंग में गाड़ी खड़ी करनी होगी और तदर्थ निर्धारित शुल्क देना होगा। यहां से पगोडा तक जाने-आने के लिए शटल बस की सुविधा करवा दी गयी है जो काम के दिनों हर एक घंटे में एक चक्र लगायेगी और अवकाश के दिनों में हर आध घंटे में।

जो लोग फेरी (नाव) से आना चाहते हैं वे जेटी से चल कर पगोडा-परिसर में सीधे पहुँच सकेंगे। इसके लिए उन्हें गोराई खाड़ी, बोरीवली से अथवा मारवे बीच, मालाड से निश्चित समयानुसार, एस्सेलवर्ल्ड की फेरी का निर्धारित वापसी टिकट लेकर आना होगा।

विश्व विपश्यना पगोडा में एक दिवसीय शिविर

प्रिय साधक-साधिकाओ!

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि 'विश्व विपश्यना पगोडा' का डोम इस प्रकार बनाया गया है कि उसमें ८,००० साधक एक साथ तप कर सकते हैं। फाउंडेशन के सभी सेवक चाहते हैं कि वर्ष में कुछेक ऐसे एक दिवसीय शिविर लगते रहें जिनमें इसकी पूरी क्षमता का उपयोग हो और साधकों को भगवान बुद्ध के पावन अस्थि- अवशेषों के सान्निध्य में ध्यान कर सकने का सुअवसर प्राप्त हो।

भगवान ने भी कहा है– **समग्गानं तपो सुखो** – एक साथ बैठ कर तपना सुखकर है।

अतः **"सार्वभौमिक विपश्यना न्यास"** अत्यंत मोद के साथ सभी विपश्यी साधकों को सस्नेह आमंत्रित करता है कि वे यथासंभव पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में होने वाले निम्नांकित सभी शिविरों का भरपूर लाभ उठाएं।

वर्ष भर के लिए एक दिवसीय शिविर की तिथियां –

१९ अप्रेल २००९, तीसरा रविवार
९ मई, २००९, शनिवार, **बुद्ध पूर्णिमा**
७ जून, २००९, रविवार, ज्येष्ठ पूर्णिमा
७ जुलाई, २००९, मंगलवार, **गुरु पूर्णिमा**
१६ अगस्त, २००९, तीसरा रविवार
२० सितंबर, २००९, तीसरा रविवार
४ अक्टूबर, २००९, रविवार, **अश्विन पूर्णिमा**
१५ नवंबर, २००९, तीसरा रविवार
२० दिसंबर, २००९, तीसरा रविवार
१९ जनवरी, २०१०, सयाजी ऊ बा खिन पुण्यतिथि
२६ जनवरी, २०१०, रविवार(२८ जन. **विश्वकर्मा जयंती**)
८ फरवरी, २०१०, सोमवार, पगोडा उद्घाटन-तिथि
६ मार्च, २०१०, शनिवार, सयाजी ऊ बा खिन जयंती
समयः प्रातः ११ बजे से दोपहर ४ बजे तक
स्थानः विश्व विपश्यना पगोडा का मुख्य डोम, गोराई, मुंबई

संपर्कः श्री आय. बी. वी. राघवन, मो. ९१-९८९२८५५६९२, ९१-९८९२८५५९४५, फोनः ९१-२२-२८४५२१११, २८४५१२०४, विस्तार- १०५. **ईमेलः** globalvipassana@gmail.com
globalpagoda@hotmail.com
Websites: www.globalpagoda.org
www.vridhamma.org (newly changed)

आवश्यकता है – टूरिस्ट गाइड की

विश्व विपश्यना पगोडा पर दर्शकों की संख्या दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है। उन्हें ठीक से समझाने-दिखाने के लिए ५-१० योग्य धर्मसेवकों की प्रतिदिन दिन भर आवश्यकता रहेगी। जो भी साधक भाई-बहन इस काम में रुचि लेकर काम करना चाहते हों और टूरिस्ट गाइड के रूप में काम करने का अनुभव भी हो, उन्हें प्राथमिकता दी जायगी। यदि कोई दिन भर नहीं रह सकते तो दिन में कब से कब तक, कितना समय दे सकते हैं, उसका विवरण लिखें। यथावश्यक वेतन दिया जायगा, परंतु विपश्यी साधक होना आवश्यक है।

सामान्यरूप से पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ट्रेनिंग दी जायगी ताकि कोई गलत सूचना न चली जाय।

इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के मोमेंटो (पगोडा चित्रित वस्तुओं) की बिक्री और उनके हिसाब-किताब की जिम्मेदारी संभालने वाले किसी विशेष व्यक्ति की। व्यक्तिगत रूप से संपर्क करें।

आवश्यकता है

विश्व विपश्यना पगोडा के रख-रखाव के लिए प्रमुख व्यवस्थापक तथा सभी प्रकार के धर्मसेवकों की आवश्यकता है। जो व्यक्ति जिस काम में विशेषरूप से प्रवीण हो– जैसे प्लंबिग, इलेक्ट्रिक्स, बागवानी, साफ-सफाई, सौंदर्यीकरण, पेंटिंग्स, जनरल व्यवस्था आदि; उसका विवरण और अपने बारे में संक्षिप्त परिचय व संपर्क पता देते हुए आवेदन कर सकते हैं। सबको यथोचित वेतन दिया जायगा।

इन सबका संपर्क – (रजि. कार्या.) ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन, ग्रीन हाऊस, दूसरा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४०००२३.

Postal Regn. No. NSK/46/2009-2011

Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

फोन– २२६६४०३९, २२६६२११३, ०९८२१११८६३५,
ईमेल– globalpagoda@hotmail.com;
spgoenka@goenkasons.com

पगोडा का सौंदर्यीकरण

पगोडा परिसर को सुंदर बनाने, दर्शकदीर्घा को सुसज्जित करने, यहां तक पहुँचने के लिए सीधी संपर्क-सड़क बनाने, अतिथियों के बैठने व विश्राम के लिए पार्क तथा अतिथि-निवास बनाने आदि का बहुत काम शेष है। इन सब के लिए लगभग दस करोड़ की लागत आयेगी। पगोडा का अब तक का सारा काम श्रद्धालुओं के अनुदान से ही हुआ है। बचा हुआ आवश्यक काम भी उनके अनुदान से ही पूरा होगा।

अधिक जानकारी व अनुदान संबंधी संपर्क– **"ग्लोबल विपस्सना फाउंडेशन"**, द्वारा- खीमजी कुँवरजी एंड कं., ५२, बांबे म्युचुवल बिल्डिंग, सर पी. एम. रोड, मुंबई- ४००००१. (फोन- ०२२-२२६६२५५०, ईमेल- shivji@khimjikunverji.com

नए उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री गुलाबराव एवं श्रीमती मंगला माली, धुळे
3. Ms. Juechan Limchitti, *Thailand*
4. Mr. Mike Cacciola, *USA*
5. Ms. Greta Gibble, *USA*
6. & 7. Mr. John and Mrs. Susanne Hing, *USA*
8. Mr. Tim Lanning, *USA*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री चमनलाल पधियार, राजकोट
२. श्री विनोद रायचूरा, राजकोट
३-४. श्री महेंद्र एवं श्रीमती रंजन शाह, मुंबई
5. Mr. Byambajav Dorlig, *Mongolia*
6. Mr. Boris Prpic, *Croatia*
7. Mr. Roel Smelt, *the Netherlands*
8. & 9. Mr. Kedaar & Mrs. Anita Ghanekar, *Canada*
10. Ms. Clotilde Pelletier, *Canada*

बालशिविर शिक्षक

१. श्री जगदीश प्रजापति, मोडासा
२. सुश्री कंचन जेसलपुरा, अहमदाबाद
३. श्री विजय तोदी, अहमदाबाद
४. सुश्री नेहा धर्मदर्शी, गांधीनगर
५. श्री भार्गव धी. कारिया, अहमदाबाद
६. कु. मालिनी प्रियदर्शी, गांधीनगर
७. कु. दक्षा संघदीप, गांधीनगर
८. कु. वीणा ठक्कर, गांधीनगर
९. श्री कमल कृष्ण आचार्य, नाशिक
10. Ms. Nary POC, *Cambodia*

दोहे धर्म के

याद करूं जब बुद्ध की, करुणा अमित अपार।
तन मन पुलकित हो उठे, चित छाये आभार॥
यही बुद्ध की वंदना, पूजन और प्रणाम।
शुद्ध धरम धारण करूं, मन होवे निष्काम॥
संप्रदाय या जाति का, जहां भेद ना होय।
शुद्ध सनातन धर्म है, वंदनीय है सोय॥
नमस्कार है धरम को, कैसा मंगल पंथ।
चलते चलते स्वयं ही, होय दुःखों का अंत॥
शांत चित्त ही संत है, किसी जाति का होय।
चले धरम के पंथ पर, सदा पूज्य है सोय॥
हिंदू मुस्लिम बौद्ध सिक्ख, जैन इसाई होय।
जिसका मन निर्मल हुआ, संत पूज्य है सोय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

नमन करूं मैं बुद्ध नै, किसा'क करुणागार।
दुक्ख निवारण पथ दियो, सुखी करण संसार॥
याद करूं जद बुद्ध नै, तन मन पुलकित होय।
किसो सुनर जग जलमियो, जन जन मंगळ होय॥
स्रद्धा जागी धरम पर, चल्यो धरम रै पंथ।
कदम-कदम चलता हुयां, हुवै दुखां रो अंत॥
गावां मंगळ धरम रो, जद जद भी गुणगान।
पावां पावन प्रेरणा, भोगां सांति निधान॥
चालत-चालत धरम पथ, पाप विखंडित होय।
तो संतां रै संघ रो, साचो पूजन होय॥
बुद्ध धरम रो, संघ रो, यो साचो सनमान।
जीवन मँह जागै धरम, हुवै जगत कल्याण॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2552, **चैत्र पूर्णिमा,** ९ **अप्रेल, 2009**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71.** Regn. **No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org